सांसारिक सुख अनायास ही नहीं प्राप्त हो जाते, इन्हें प्राप्त करने के लिए साधनात्मक बल एवं सिद्धि का होना आवश्यक है, क्योंकि उन सुखों को प्राप्त करना तो महत्वपूर्ण है ही, लेकिन उन सुखों का सदुपयोग करना, उससे भी अधिक आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है। साधक सुख प्राप्त कर उनका उपयोग कर सके, इसीलिए तो देवी अपने त्वरिता स्वरूप में परम कृपालु बन उसके लिए तत्क्षण उन्मुख रहती हैं, आवश्यकता है उस शक्ति तत्त्व को अपने अंदर जाग्रत करने की।

22.12.2017

त्वरिता शक्ति साधना

सांसारिक सुख, प्रेम और ऐश्वर्य प्रदायक

आज मानव एक ऐसी भौतिक विज्ञानधारा में बह रहा है, जहां उसे कुछ प्राप्त होने वाला नहीं है। वह अनन्त आकाश में जितना चाहे उतना विचरण कर सकता है, किन्तु उसकी अशक्तता, असमर्थता उसे निर्मुक्त विचरण करने नहीं देती, क्योंकि वह पंख फैलाकर उड़ने की कला भूल चुका है, इसीलिए वह असंतप्त है, अतृप्त है। इच्छाओं का दमन होने के कारण वह पिपासु बना रहता है, उसे कहीं तृप्ति नहीं मिलती. . .और जब तक उसके मन को शांति नहीं मिलेगी, तृप्ति नहीं मिलेगी, तब तक वह यूँ ही भटकता रहेगा, आवश्यकता है इस भटकाव को रोकने की, समाप्त करने की।

यदि विवेकशील मनुष्य इस बात पर विचार करे, कि अतृप्तता का मूल कारण क्या है, तो वह इस निष्कर्ष पर पहुँचेगा, कि जब तक जीवन में व्यक्ति भोग और मोक्ष दोनों प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक वह अतृप्त ही रहता है। जरा-मरण शरीर के, शोक-मोह मन के और क्षुत्पिपासा प्राण के धर्म हैं..... और जब तक व्यक्ति इनसे विरक्त होने का प्रयास नहीं करेगा, तब तक उसकी पिपासा भी शांत नहीं होगी..... विरक्त होने तात्पर्य यह नहीं, कि इन सब चीजों का मोह त्याग कर संन्यासी बन जाओ और हिमालय की गुफाओं में बैठ कर आँख बंद कर लो, वरन् उन सब भोगों को भोगते हुए अपने मन, प्राणों को विरक्त कर देना ही 'विरक्ति' है .....और वह तब हो सकता है, जब मायावी अर्थात् प्रकृति, जो अपनी शक्ति से मनुष्य को भ्रमित किए हुए है, उस पर मानव का पूर्णरूप से अधिकार हो जाए।

त्वरिता शक्ति स्वरूप में

देवी का ध्यान प्रिया रूप में किया जाता है। ये षोडश वर्षीया हैं, इन्होंने अपने हाथ में पाश, अंकुश, वरद् और अभय मुद्रा धारण कर रखे हैं।

ये पत्तों के आसन पर निवास करती हैं। आभूषण के रूप में (सर्पों) को धारण कर रखा है। ये समस्त भौतिक सुख, प्रेम और ऐश्वर्य प्रदान करने के साथ-साथ जीवन के वास्तविक आनन्द को प्रदान करने वाली मोहिनी शक्ति है। ये तत्क्षण फल प्रदायिनी हैं।

मनुष्य में अनन्त संभावनाएं हैं, यह अलग बात है, कि वह अपनी संभावनाओं को न पहिचान सके। मानव अपने मूल स्वरूप को नहीं पहिचानता, यही कारण है कि वह संत्रस्त है, यदि वह अपने अन्दर निहित ज्ञान शक्ति को पहिचान ले, तो धीरे-धीरे उसके हृदय का त्रास समाप्त हो सकता है। यह उसकी न्यूनता है, कि वह स्वयं शक्ति सम्पन्न होने के बाद भी अपने-आप को दुर्बल, अशक्त समझे बैठा है, उसे अपने अंतर्निहित तत्वों का भली प्रकार से ज्ञान नहीं है, वस्तुतः वह माया शक्ति के वशीभूत हो अध्यात्म जगत में विचरण नहीं कर पाने के कारण असंतोषी है..... उसे संतोष तो तब प्राप्त होगा, जब वह समस्त सांसारिक सुखों को भोग कर अध्यात्म के पथ पर गतिशील हो सकेगा।

शक्ति तो एक भाव है, सामर्थ्यता को प्रकट करने का। मीमांसकों के अनुसार साधना ही एकमात्र ऐसा माध्यम है, जिसके द्वारा शरीर में स्थित क्रियाशक्ति को सम्पूर्ण रूप से जाग्रत किया जा सकता है और जीवन में सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य को भोगते हुए जीवन का आनन्द प्राप्त किया जा सकता है। जहाँ आत्म-शक्ति है, वहां शुद्धि, सिद्धि, बुद्धि, ऐश्वर्य, अग्नि, अजेयता है। 'शक्ति' अग्नि तत्त्व की स्वामिनी है, इसके बिना मनुष्य शव रूप है, इसके बिना कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं किया जा सकता है, जिसने प्रकृति के विस्तृत भण्डार में से एक भी अंश अपने अधीन कर लिया, वही शक्ति युक्त है।

अग्नि में दो शक्तियां निहित होती हैं - प्रकाशिका और दाहिका। प्रकाशिका का कार्य होता है - अंधकार को दूर कर प्रकाश का पुनर्स्थापन करना; और दाहिका का कार्य होता है - जला देना। ये दोनों ही अपने गुण-धर्म के अनुसार कार्य करती रहती हैं, ठीक इसी प्रकार साधक के भीतर निहित शक्ति को साधना के बल पर जाग्रत करने से वे अपने गुण-धर्म के अनुसार कार्यरत रहती हैं और साधक को अंतर व बाह्य दोनों रूपों से शक्ति सम्पन्न बना देती हैं।

साधक के अंतर में व्याप्त शक्ति को 'त्वरिता शक्ति साधना' के माध्यम से प्रवाह प्रदान कर आश्चर्यजनक उपलब्धियां प्राप्त की जा सकती हैं, क्योंकि यही शक्ति कभी मायावीश्वरी, कभी महाशक्ति, कभी दुर्गा, कभी नारायणी, तो कभी शिव-शक्ति के रूप में अलग-अलग रूप धारण कर साधक को पूर्णता प्रदान करती है।

त्वरिता शक्ति 'दुर्गा का ही स्वरूप मानी गयी है, जिससे सभी शक्तियों का प्रादुर्भाव हुआ है। जब मनुष्य के शरीर में इस शक्ति तत्त्व का प्रादुर्भाव हो जाता है, तब उसके जीवन में दुःख, दारिद्र्य, दुर्भाग्य का कोई स्थान नहीं रह जाता, क्योंकि जहां त्वरिता शक्ति हैं, वहां सम्पन्नता है, सौभाग्य है।

मानव मन स्वभावतः चंचल होने के कारण उसमें अनेक अवगुणों एवं दुर्भावनाओं आदि का जागरण होना एक स्वाभाविक क्रिया है और यह तब होता है जब व्यक्ति अपने मन के अनुसार कार्य नहीं कर पाता या फिर प्रेम के क्षेत्र में कोई उसका बहिष्कार कर देता है, ऐसी स्थिति में त्वरिता शक्ति साधना के द्वारा दूषित भावनाओं को परिवर्तित कर प्रेम की भावना को बढ़ावा दिया जा सकता है और मनोनुकुल कार्य सम्पन्न कर जीवन का पूर्ण आनन्द लिया जा सकता है।

साधना विधि

1. इस साधना में आवश्यक सामग्री है - 'त्वरिता यंत्र' 'त्वरिता सपर्या' एवं 'त्वरिता माला'।
2. 22.12.17 को साधक प्रातःकाल दोनों हाथ जोड़कर आदिशक्ति से सुख, प्रेम और ऐश्वर्य प्रदान करने की कामना करें। फिर स्नान आदि से निवृत्त हो जायें। इस साधना के लिए सफेद वस्त्र पहिनने चाहिए और गुरु मंत्राभिसिक्त पीताम्बर ओढ़ना आवश्यक है।
3. यह साधना आठ दिनों की है, अपनी

सुविधानुसार साधक इसे सुबह या रात्रि किसी भी समय कर सकता है तथा पौष मास में यदि यह साधना करना संभव न हो सके, तो किसी भी माह के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को इस साधना को प्रारंभ किया जा सकता है।

4. श्वेत आसन पर बैठ जायें, अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछा दें तथा उस पर केसर से सर्प की आकृति अंकित करें। इस आकृति के ऊपर **'त्वरिता यंत्र'** को स्थापित कर दें और केसर या हल्दी से रंगे हुए अक्षत अपने हाथ में ले लें तथा दाहिने हाथ से थोड़े-थोड़े अक्षत यंत्र पर चढ़ाते हुए निम्न मंत्र बोले -

ॐ ह्रीं त्वरितायै नमः।
ॐ हुं करालिन्यै नमः।
ॐ खेचक्षे खेचर्यै नमः।
ॐ क्षं क्षत्रहस्तायै नमः।
ॐ क्षीं महालक्ष्म्यै नमः।
ॐ हुं चामुण्डायै नमः।
ॐ क्लीं काल्यै नमः।

5. इस पूजन के पश्चात् **'त्वरिता सपर्या'** को यंत्र के ऊपर स्थापित कर केसर से तिलक करें और सुगंधित पुष्प चढ़ाये।
6. चार हल्दी की गांठों को बाजोट पर चारों दिशाओं में स्थापित करें तथा उनका भी केसर, अक्षत एवं पुष्प से पूजन करें।
7. सुगंधित धूप एवं अगरबत्ती पूरे साधना काल में लगी रहनी चाहिए।
8. **'त्वरिता माला'** से निम्न मंत्र की पांच माला जप करें -

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं हुं खेचक्षे क्षं क्षीं हुं क्लीं फट्॥

9. साधना क्रम में तीसरे या चौथे दिन ही साधक को कस्तूरी या अष्टगंध की सुगंध का अनुभव हो सकता है; पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास से इस साधना को सम्पन्न करने वाले साधक को देवी अपने त्वरिता स्वरूप में आकर सुख, प्रेम और ऐश्वर्य का वरदान प्रदान करती हैं।
10. पूजा में नित्य ताजे सुगंधित पुष्प चढ़ायें तथा नैवेद्य के रूप में खीर का भोग लगायें।

11. मंत्र जप पूरा करने के बाद जब आप आसन से उठें, तो खीर का प्रसाद स्वयं ग्रहण करें, किसी दूसरे को न दें।
12. आठवें दिन मंत्र-जप समाप्ति के पश्चात् दुर्गा की आरती करें और उस दिन जो नैवेद्य चढ़ायें उसे अपने परिवारजनों में भी वितरित करें।
13. इस साधना में प्रयुक्त सामग्री - यंत्र, सपर्या एवं माला तथा हल्दी की गांठों को बाजोट पर बिछे कपड़े में लपेट कर नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।
14. सांसारिक सुख, गृहस्थ अनुकूलता, सुन्दर पति या पत्नी की प्राप्ति, प्रेम में सफलता एवं ऐश्वर्य प्राप्त करने हेतु त्वरिता शक्ति साधना अद्वितीय साधना है।

साधना सामग्री -
(यंत्र, सपर्या, माला) न्यौछावर - 450/-

अनिन्द्य सौन्दर्य एवं पौरुष

उर्वशी प्रयोग

जो पुरुष को पौरुषत्व एवं स्त्रियों को सौन्दर्य प्रदान करती ही है

जिसे इन्द्र ने स्वयं सिद्ध कर जीवन की पूर्णता प्राप्त की थी

एक बार आप आजमा कर तो देखिये न!

अद्भुत सौन्दर्ययुक्त माधुर्य और प्रेम से लबालब दुर्लभ प्रयोग

यौवन की आभा से उद्दीप्त कोमल काया, गौर वर्ण, घटाओं सी लहराती खुली केश-राशि, मुख मण्डल पर अपूर्व तेजस्विता। रक्त वर्णीय परिधान व ललाट पर लाल बिन्दी..... रूप और सौन्दर्य की अद्भुत आधार शिला है वह षोडश वर्षीय उर्वशी।

जिसे पाने के लिए देवता भी लालायित रहते हैं, एक सौ आठ अप्सराओं में से सर्वश्रेष्ठ कौन नहीं पाना चाहेगा, ऐसी सौन्दर्य रूपा उर्वशी को..... जिसका नाम सुनते ही मन में एक हलचल सी मंच जाती है, उसे देख लेने के लिए मन बेचैन हो उठता है।

और फिर हमारे पूर्वजों विश्वामित्र, गौतम, अत्रि, कणाद यहां तक कि भगवान श्रीकृष्ण आदि ने भी इसे प्रियारूपेण सिद्ध कर जीवन की श्रेष्ठता और सफलता प्राप्त की थी।

उर्वशी अप्सरा प्रियारूपेण जहां पुरुषों को पौरुषत्व प्रदान करती है, वहीं स्त्रियों को अद्बितीय सौन्दर्य प्रदान करती है, जिसे इन्द्र ने स्वयं सिद्ध कर जीवन की पूर्णता प्राप्त की। हर स्त्री व पुरुष सौन्दर्य प्राप्त करने के लिए उत्सुक एवं लालायित रहता ही है, क्योंकि सौन्दर्य के बिना उमंग भरे जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती।
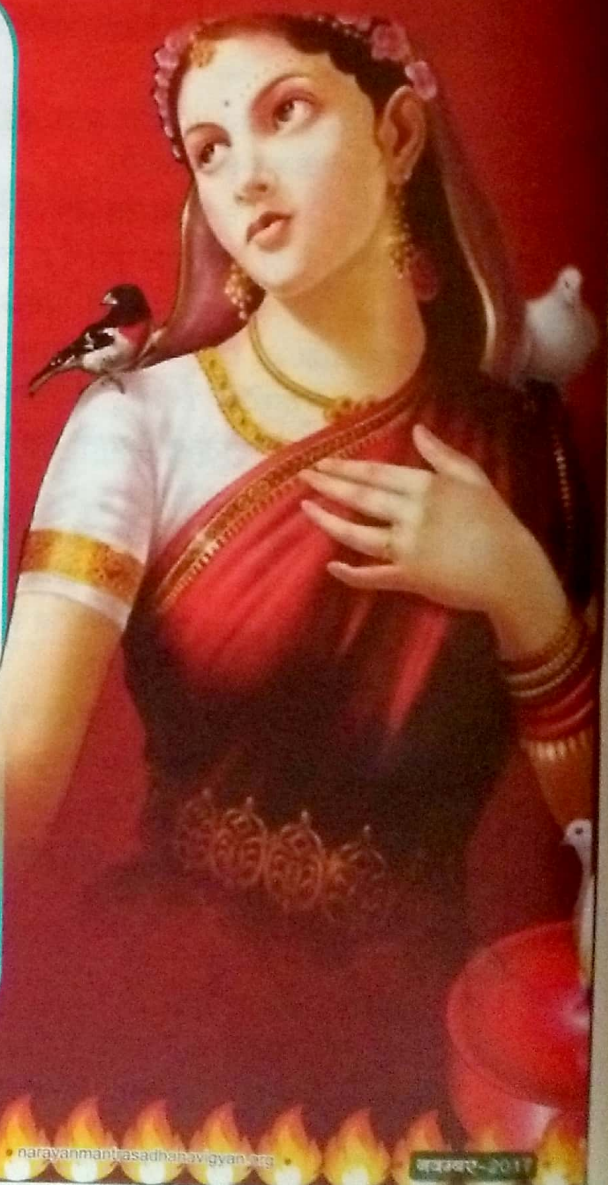
जहां उर्वशी साधना पुरुष को पौरुषता, कर्मठता और प्रबलता प्रदान करती है, वहीं स्त्रियों को सौन्दर्य और कोमलता भी प्रदान करती ही है, क्योंकि हर स्त्री व पुरुष सौन्दर्य प्रेमी है, हरेक चाहता है कि वह युवा और आकर्षक बने, उसके शरीर से यौवन की आभा स्पष्ट छलकती हुई सी इधर-उधर बिखरकर औरों के मन को लुभा लेने वाली हो, जिसे देखकर व्यक्ति कुछ क्षणों के लिए स्तब्ध सा खड़ा रह जाए. . .एकटक उसकी आँखें इस सौन्दर्य को निहारने लगें, मानों कोई सौन्दर्य का झरना उसके शरीर से उमड़-घुमड़ कर किसी को भी सराबोर कर देने की कला जान गया हो, जिसकी गहराई में वह डूबता ही चला जाए . . .

सभी तो सौन्दर्य से लबालब हो जाना चाहते हैं। ठीक अप्सरा की तरह ही. . .जिसे कला आती है रोक लेने की। हर स्त्री का यह सपना होता है, कि वह अप्सरा की तरह ही सौन्दर्यशीला हो. . .आँखों में आकर्षण एवं चेहरा चन्द्रमा के समान शीतल, सौन्दर्य युक्त, आकर्षण युक्त हो, आवाज वीणा की झंकार के समान मधुर तथा पूरा शरीर स्वस्थ, सुन्दर, आकर्षक व पुष्ट हो।

जितना महत्व नारी सौन्दर्य का है, उतना ही पुरुष सौन्दर्य का भी है - भरापूरा लम्बा कद, पुष्ट कंधे, उन्नत ललाट, लम्बी बाहें, चौड़ा वक्षस्थल और साथ ही दृढ़ता, पौरुष और साहस का समन्वय, एक ऐसा सौन्दर्य जिसे देखकर हर कोई देखता रह जाए।

......और यह प्रयोग ऐसा ही प्रभावोत्पादक फलदायक सिद्ध है, जिसे हजारों लोगों ने आजमाया है और सत्य की कसौटी पर कस कर यह प्रमाणित हो चुका है .....तभी तो पत्रिका के माध्यम इसे प्रदान किया जा रहा है।

उर्वशी प्रयोग पूर्ण कायाकल्प प्रयोग है, जिसके माध्यम से युवा बना जा सकता है। ''कायाकल्प'' अर्थात् काया को परिवर्तित कर देना..... और यह गोपनीय प्रयोग विधि ऐसी ही चमत्कारिक एवं आश्चर्य चकित कर देने वाली है, जिसमें शरीर की जर्जरता के साथ-साथ मन की जड़ता को भी समाप्त कर देने की शक्ति समाहित है।

यह प्रयोग अत्यंत ही उपयोगी, दुर्लभ एवं गोपनीय है, जिसके लिए योगी-संन्यासी, यतियों ने अनेकों कष्ट सहन किये, जंगलों की खाक छानी, साधु-संन्यासियों की सेवा की. . .जो आपको इतनी सरलता व सुगमता से इस पत्रिका के माध्यम से प्राप्त हो रहा है, जिसे प्राप्त करके उन्होंने अपने सौभाग्य को सराहा; जिसके माध्यम से उन्होंने निर्धनता को सम्पन्नता में, बुढ़ापे को यौवन में बदलने के साथ-साथ समस्त सांसारिक सुख, वैभव, विलास और सम्पूर्ण आनन्द को भी प्राप्त कर लिया। यह तो सर्वश्रेष्ठ साधनाओं में से एक है, जिसे सिद्ध कर व्यक्ति नारकीय जीवन को त्याग कर पूर्ण आनन्द प्राप्त करने में समर्थ हो सकता हैं

नेपाल के एक पुस्तकालय से प्राप्त हस्तलिखित ग्रंथ से ही हमें इस प्रयोग की गोपनीय विधि व इससे प्राप्त लाभों का वर्णन मिला, जिसकी प्रमाणिकता को परख करके ही इसे पाठकों के लाभार्थ दिया जा रहा है।

1. इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए 'उर्वशी माल्य' और 'उर्वशी यंत्र' की आवश्यकता होती हैं
2. यह साधना 01/12/17 या किसी भी शुक्रवार के दिन प्रारंभ कर सकते हैं।
3. तीन दिवसीय यह प्रयोग रात्रिकालीन है।
4. साधक सुन्दर वस्त्रों से सुसज्जित होकर पूजा गृह में धूप व अगरबत्ती लगा कर वातावरण को मधुर और सुगंधमय बनायें।
5. पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठें।
6. तेल या घी का दीपक प्रज्वलित करें।
7. सामने उर्वशी यंत्र स्थापित करें तथा अक्षत की ढेरी बनाकर उस पर माला स्थापित कर दें।
8. फिर उर्वशी अप्सरा का ध्यान करें, साधक जिस रूप में उसका सहयोग पाना चाहते हैं, मन ही मन प्रार्थना कर उसके उसी स्वरूप का चिंतन कर ध्यान करें।
9. इसके बाद यंत्र व माला का कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप व गुलाब के पुष्पों से पूजन करें।
10. इसके बाद उर्वशी माला से नित्य 21 माला निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

।। ॐ सं सौन्दर्य सिद्धये स्वाहा।।

11. मंत्र जप के पश्चात समस्त सामग्री को चौथे दिन जल में विसर्जित कर दें।

यह प्रयोग सिद्धि प्रदायक है, सिद्धि का अर्थ है - समस्त भौतिक सुखों की प्राप्ति यौवन, सौन्दर्य एवं सौभाग्य की प्राप्ति।

साधना सामग्री - न्यौछावर - 450/

ऐसा अद्वितीय प्रयोग जो अपने ही रूप में ढाल दे और कर दे पूर्ण शरीर का कायाकल्प।
प्रत्येक स्त्री पुरुष के लिए सौन्दर्य की प्राप्ति हेतु अद्भुत . . .आश्चर्यजनक एवं अद्वितीय प्रयोग . . .सौन्दर्य और सिद्धि का पूरक. . . .

किसी भी गुरुवार
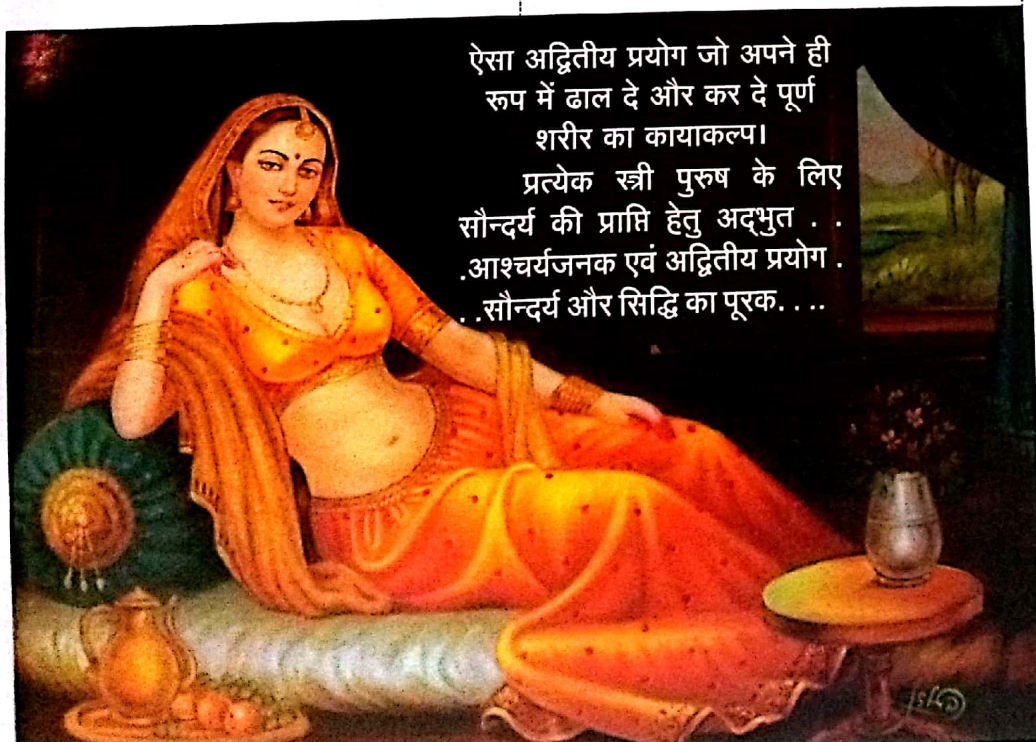
(जिसके चैतन्य होने मात्र से कई बीमारियों से बचाव हो सकता है)

विशुद्ध चक्र जागरण साधना

आकाश तत्त्व, पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु आदि तत्त्वों से सूक्ष्म है, यह सर्वव्यापक भी है, सम्पूर्ण ब्रह्माण में इसका विस्तार है, अतः यह अन्य तत्वों को अपने अन्दर धारण करने की क्षमता रखता है। इस सूक्ष्मता के कारण ही यह सभी पदार्थों के अन्दर प्रविष्ठ है।

यौगिक विज्ञानमय कोश की अवधारणा के अनुसार आकाश तत्त्व अन्य सभी तत्त्वों का सहचर है तथा शरीर में इसकी उपस्थिति के कारण ही शरीर के सभी अवयव गतिशील हो पाते हैं। इस प्रकार शरीर की समस्त जैविक क्रियाओं की उत्पत्ति का मूल कारण आकाश तत्त्व ही है।

मात्र शारीरिक अवयव ही नहीं, शब्द, वायु, मेघ, विद्युत, ग्रह, उपग्रह, नक्षत्र आदि भी इसी तत्त्व का अवलम्बन प्राप्त कर गतिशील हो पाते हैं। स्थूल शरीर के अलावा सूक्ष्म शरीर को भी सबसे अधिक इसी तत्त्व की आवश्यकता पड़ती है। इस अवस्था में पृथ्वी और जल तत्त्व का सर्वथा लोप हो जाता है और साधक इसी तत्त्व का आश्रय ले कर लोक-लोकान्तरों में गमन कर पाता है।

समस्त शारीरिक क्रियाओं का मुख्य कारण होने के कारण इबोपी में आकाश तत्त्व का अत्यधिक महत्त्व है। इस तत्त्व पर नियंत्रण प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति अपने शरीर की समस्त स्थूल क्रियाओं पर नियंत्रण स्थापित करने में सक्षम हो जाता है और इसका लाभ यह होता है, कि वह अपने शरीर को नये रोगों से मुक्त रखने की क्रिया जानने लगता है। इस प्रकार व्यक्ति नये रोगों से अपना बचाव करने में सक्षम होता है।

यह पड़ाव है 'विशुद्ध चक्र' का . . .विशुद्ध अर्थात् पूर्णतः शुद्ध. . . यहां तक पहुंचते-पहुंचते अज्ञानता का समस्त अंधकार तिरोहित हो जाता है, आत्मा पर पड़ी अशुद्धियों की धूल समाप्त हो जाती है और पूर्णतः शुद्ध ज्ञान की प्राप्ति होने से आत्मा का निर्मल सत् चित् स्वरूप आभासित होने लगता है . . . और इसकी विलक्षण उपलब्धियां . . .प्राप्त कर लेने के बाद भी सहज ही विश्वास नहीं होता, सब कुछ स्वप्लिल लोक सा नजर आता है . . .परंतु वास्तविकता तो वास्तविकता होती है . . .और इस वास्तविकता का एहसास कर गर्व से सिर ऊंचा हो जाता है. . .गर्व होता है हमारे पूर्वज ऋषियों पर. . .गर्व होता है भारत की प्राचीन विद्याओं पर. . .गर्व होता है इतना अद्वितीय ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपने आप पर. . .और फिर सिर झुक जाता है गुरुत्व की श्रेष्ठता के आगे, जिसकी करुणा, जिसकी कृपा से ऐसा अद्भुत अध्याय इस जीवन में प्रारंभ हो पाया, जिसके चरणों में समर्पण करते ही श्रेष्ठता और अद्वितीयता की उपलब्धि इतने सहज रूप में संभव हो सकी . . .

यह सब आपको 'परी-कथाओं' की तरह अनुभव हो सकता है, क्योंकि व्यक्ति सामान्यतः अपनी अनन्त शक्तियों से अनभिज्ञ रहता है। इसका कारण यह है, कि हम न तो अपनी आत्मिक शक्तियों को अच्छी तरह पहिचान पाये हैं और न ही अपनी मानसिक शक्तियों को, तथा दुर्भाग्यवश हम व्यर्थ के तर्क-कुतर्क में समय व शक्ति को व्यय करते रहते हैं। जिस दिन हम अपनी पूर्ण मानसिक एवं आत्मिक शक्तियों को जान लेंगे, उस दिन हमारे लिये कुछ भी असंभव नहीं रहेगा।

बिना जाने-बूझे, बिना कसौटियों पर कसे यह मत बना लेना, कि कोई तथ्य झूठ है, क्या यह वास्तव में ठीक होगा? यह तो केवल हमारी मानसिकता का संकुचन है, कि हमारे विचार एक सीमित क्षेत्र के बाहर नहीं जा पाते तथा हम उन अखण्ड तथ्यों को नहीं समझ पाते, जिन्हें हजारों वर्ष पूर्व हमारे ऋषि, मुनियों तथा योगियों ने पहिचाना था।

विशुद्ध चक्र की कई और भी अद्‌भुत उपलब्धियां हैं, जिनमें से एक है - 'लेखन की प्रतिभा'। इस उपलब्धि के प्राप्त होते ही गद्य, पद्य, काव्य, दर्शन आदि अपने आप ही उसकी कलम से निकलने लगते हैं, भाषा तथा उसके सटीक प्रयोग का उसे ज्ञान हो जाता है, अपनी लेखनी के द्वारा वह सुन्दर साहित्य की रचना कर पाता है तथा वह चाहे तो साहित्य जगत में कमा सकता है।

महाकवि कालिदास प्रारंभ में अत्यंत ही मूढ़ व्यक्ति थे, जिनमें सामान्य व्यावहारिक ज्ञान का भी अभाव था। उनकी शिक्षा नहीं हुई थी, अतः साहित्य या किसी अन्य विषय में वे एकदम कोरे थे। विद्योत्तमा के द्वारा अपमानित होने के उपरांत उन्हें गुरु सान्निध्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ था और गुरु ने उनकी सेवा और समर्पण से प्रसन्न होकर उनके चक्रों को पूर्ण चैतन्यता प्रदान की थी, जिसके फलस्वरूप वे अत्यंत श्रेष्ठ विद्वान बन सके और **'महाकवि'** की उपाधि से सम्मानित हो सके। उन्होंने **'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'** तथा **'मेघदूत'** जैसी अमर रचनाएं इस समाज को दीं। कहा जाता है, कि उनके जैसा श्रेष्ठ विद्वान इतिहास में कोई दूसरा नहीं हो सका।

इस चक्र के पूर्णतः चैतन्य होने पर अनाहत चक्र से प्रारंभ हुआ आत्मा का ब्रह्माण्ड से संयोग और अधिक घनिष्ठता को प्राप्त होता है। इस प्रकार अनाहत चक्र से आत्मा और ब्रह्माण्ड में सर्वत्र स्थापित शक्ति का जो सामंजस्य प्रारंभ होता है, विशुद्ध चक्र पर पहुंचने पर उसमें धीरे-धीरे परिपक्वता आने से आध्यात्मिक उत्थान अपनी चरम सीमा की ओर अग्रसर होने लगता है।

विशुद्ध चक्र भारतीय वैदिक सिद्धांत के पंच तत्त्वों में से 'आकाश तत्त्व' का प्रतिनिधित्व करता है। आकाश तत्त्व चूंकि इस ब्रह्माण्ड में सर्वत्र व्याप्त है, अतः इस चक्र पर नियंत्रण प्राप्त होते ही व्यक्ति का संबंध सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड से हो जाता है और उसे इसके सूक्ष्मातिसूक्ष्म रहस्यों का भी सहज ही ज्ञान हो जाता है।

लेकिन आकाश तत्त्व अत्यंत ही विरल है, अतः सहज ही इस पर नियंत्रण प्राप्त करना संभव नहीं है। इसे नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है, कि कोई दिव्य शक्ति शरीर में त्वरित हो. . . और यह क्रिया संभव होती है 'गुरु' से प्राप्त 'शक्तिपात' द्वारा, शक्तिपात के उपरांत ही विशुद्ध चक्र का पूर्ण चैतन्यीकरण संभव है।

यह चक्र कण्ठ प्रदेश में स्थित होता है। जब यह पूर्णतः चैतन्य होता है, तो व्यक्ति के कण्ठ में स्वतः ही सरस्वती का स्थापन हो जाता है, स्वतः ही वेदों का पूर्ण ज्ञान हो जाता है, आधुनिक और प्राचीन सभी विद्यायें उसके मस्तिष्क में अपने आप प्रविष्ट हो जाती हैं, उसकी वाणी अत्यंत ओज युक्त हो जाती है और वह किसी भी विषय पर घंटों धारा प्रवाह बोल सकता है।

इस चक्र का आकार षोडश दलों वाले कमल के समान होता है। यह चक्र दिव्य ज्ञान की प्राप्ति का प्रतीक है। इसका रंग पीला होता है जो कि इसके चैतन्य होने के पश्चात् निःसृत होने वाली रश्मियों का रंग

है। इसके देवता 'पंचवक्त्र' (सदाशिव) तथा उनकी शक्ति 'शाकिनी' है।

विशुद्ध चक्र को पूर्ण स्पन्दन एवं चैतन्यता प्रदान कर निम्न उपलब्धियों की प्राप्ति की जा सकती है –

1. इस चक्र के पूर्णत: चैतन्य होने पर आकाश तत्त्व पर नियंत्रण स्थापित होता है। जो व्यक्ति क्रमश: मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर तथा अनाहत चक्र को चैतन्य करते हुए इस मुकाम पर पहुंचते हैं, उनका अपने शरीर के सभी पंच तत्त्वों पर नियंत्रण स्थापित हो जाता है।
2. इस चक्र के पूर्णत: चैतन्य और स्पन्दन युक्त होने पर व्यक्ति अपने **शरीर का नये रोगों से बचाव** करने की क्रिया जान लेता है।
3. इसके माध्यम से **तनाव से पूर्णत:** मुक्ति मिल जाती है।
4. इसके द्वारा **तपेदिक रोग पर नियंत्रण** प्राप्त किया जा सकता है।
5. **गले का दर्द, टॉन्सिल, गलगण्ड** आदि रोगों को इस चक्र के माध्यम से समाप्त किया जा सकता है।
6. **थायरॉइड ग्रन्थि की विकृतियों** को इस चक्र की शक्तियों का उपयोग कर दूर किया जा सकता है।
7. यदि **सर्दी, जुकाम, खांसी, साइनस** आदि बीमारियां सदैव बनी ही रहती हों, तो इस प्रयोग को अवश्य सम्पन्न करें।
8. **अस्थमा** को भी इस चक्र के माध्यम से दूर किया जा सकता है।
9. **निम्न या उच्च रक्तचाप** की बीमारी को इस चक्र की सहायता से दूर किया जा सकता है।
10. विशुद्ध चक्र के चैतन्य होने पर **आंखों से संबंधित न्यूनताएं** दूर होने लगती हैं और मोतियाबिन्द, रतौंधी आदि समस्यायें यदि प्राथमिक अवस्था में हैं, तो समाप्त हो जाती है।
11. इस प्रयोग के द्वारा व्यक्ति के कण्ठ में ज्ञान तथा बुद्धि की देवी सरस्वती का स्थापन हो जाता है, जिसके फलस्वरूप वह किसी भी विषय पर अधिकार पूर्वक घंटों बोल सकता है।
12. इसके द्वारा व्यक्ति **'वाक् सिद्धि'** प्राप्त कर सकता है। वाक् सिद्धि का अर्थ है – व्यक्ति जो भी बोले, वह सत्य हो। इस प्रकार श्राप तथा वरदान देने की शक्ति प्राप्त की जा सकती है।
13. इस चक्र के माध्यम से व्यक्ति अपने अंदर लेखन या कवित्व की प्रतिभा को पूर्ण रूप से जाग्रत कर सकता है और साहित्य जगत की ऊंचाइयों को स्पर्श कर सकता है।
14. इस चक्र के माध्यम से व्यक्ति **गायन और संगीत** के क्षेत्र में पारंगत हो सकता है।
15. इस चक्र को पूर्णत: चैतन्यता प्रदान कर व्यक्ति नृत्य की भाव-भंगिमाओं को समझ कर उनमें निष्णात हो सकता है।
16. इस चक्र जागरण की सहायता से **'शून्य सिद्धि साधना'** में आने वाली बाधाएं समाप्त होती हैं और सहज ही सफलता मिल जाती है।
17. अनाहत चक्र पर प्राप्त होने वाली समाधि की प्राथमिक अवस्था में विशुद्ध चक्र पर पहुंचने पर परिपक्वता आने लगती है।
18. इसके माध्यम से व्यक्ति **'पूर्ण योग सिद्धि'** प्राप्त कर अपने शरीर एवं आत्मा पर पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर सकता है।
19. इस चक्र को पूर्णत: चैतन्यता प्रदान कर व्यक्ति **इच्छा मृत्यु** की क्षमता प्राप्त कर स्वेच्छा से प्राणों का त्याग करता है।
20. इस चक्र की एक अन्य उपलब्धि है – **'पूर्ण सांसारिक सफलता'**, अर्थात् भौतिक सुख, धन, दौलत, यश, सम्मान आदि सभी सांसारिक उपलब्धियां व्यक्ति प्राप्त कर सकता है, यदि उसकी ऐसी इच्छा हो।
21. विशुद्ध चक्र की एक अन्य अद्भुत उपलब्धि है – **'सम्मोहन'**। अनाहत चक्र पर प्राप्त होने वाली सम्मोहन की प्रारंभिक अवस्था इस चक्र पर पूर्णता को प्राप्त करती है।

साधना विधान

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए प्राण प्रतिष्ठित एवं मंत्र सिद्ध 'विशुद्ध यंत्र' की आवश्यकता होती है।

किसी भी गुरुवार की प्रात:काल ब्रह्म मुहूर्त में स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर, पीले रंग के स्वच्छ वस्त्र धारण कर, पीले रंग के आसन पर बैठ जायें, दिशा उत्तर या पूर्व की ओर हो। सामने बाजोट पर पीले रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर केसर से स्वस्तिक का निर्माण कर उस पर विशुद्ध यंत्र की स्थापना करें।

सबसे पहले सद्गुरुदेव का ध्यान कर उनका सामान्य पूजन सम्पन्न करें –

ध्यानं

॥ त्वं विशुद्धं त्वं ब्रह्म त्वं विष्णु त्वं रुद्र त्वं तत्त्वमसि त्वं पूर्ण ॐ॥

गुरु पूजन के उपरांत विशुद्ध यंत्र का कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य चढ़ा कर पूजन करने के पश्चात् उसे ध्यान पूर्वक देखते हुए (यदि संभव हो, तो त्राटक करते हुए) पूर्ण एकाग्र होकर स्फटिक माला से निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें–

मंत्र

॥ ॐ ह्रीं क्रीं विशुद्धाय फट् ॥

OM HREEM KREEM VISHUDDHAY PHAT

ऐसा सात दिन तक नित्य करें। ऐसा करने पर यंत्र में संग्रहित शक्तियों का स्थापन शरीर स्थित विशुद्ध चक्र में हो जाता है, फलस्वरूप विशुद्ध चक्र के स्पन्दन की तीव्रता में वृद्धि होने से वह चक्र चैतन्य हो जाता है। सात दिन के पश्चात् यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें एवं माला धारण कर लें।

अब उपरोक्त 21 बिन्दुओं में से आप जिस भी क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं या जिस रोग को समाप्त करना चाहते हैं, उसके लिए गुरुवार के दिन प्रात:काल ब्रह्म मुहूर्त में दैनिक नित्य कर्म के पश्चात् पीले रंग के वस्त्र धारण कर पीले आसन पर बैठ जायें तथा गुरु पूजन सम्पन्न कर मनोवांछित संकल्प ले कर, पंचवक्त्र और उनकी शक्ति शाकिनी से उस इच्छा की पूर्ति की प्रार्थना करते हुए विशुद्ध चक्र पर अपना ध्यान केन्द्रित कर उपरोक्त मंत्र का 5 माला मंत्र जप उसी स्फटिक माला से करें। ऐसा करने पर विशुद्ध चक्र में निहित ऊर्जा स्पन्दित हो कर आपको शक्ति प्रदान करेगी और इस प्रकार आपकी इच्छा धीरे-धीरे पूर्ण हो सकेगी।

न्यौछावर - 450/-